JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

English Title - Raashtreey Ekeekaran Aur Vishv Shaanti Ke Lie Shiksha

Dr. Anjani Kumari
Max Institute of Teachers Training,
Bijuliya, Ramgarh (Jharkhand)

Abstract : राष्ट्रीय एकीकरण नागरिकों के विचार व्यवहार और संकल्प से उत्पन्न होता है एक नागरिक के नाते प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह उन शक्तियों और विचारों का विरोध करें और उसका काम ना करें जो राष्ट्रीय एकता और अखंडता को कमजोर करती है तथा ऐसे कार्य करें जिससे राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रीय एकीकरण मजबूत होता है विश्व शांति शिक्षा एक सक्रिय दृष्टिकोण है जिसका मुख्य उद्देश्य अहिंसा सहिष्णुता समानता मतभेदों के सम्मान और सामाजिक न्याय के आधार पर एक संघर्ष को रोकने के लिए शांतिपूर्ण अस्तित्व के लिए समाज को शिक्षित करना है जब किसी समाज में सारे व्यक्ति किसी निर्दिष्ट भौगोलिक सीमा के अंदर अपने पारस्परिक भेदभाव को बुलाकर सामूहिक ई करण की भावना से प्रेरित होते हुए एकता के सूत्र में बंद जाते हैं। तो उसे राष्ट्र के नाम से पुकारा जाता है राष्ट्र वादियों का मत है व्यक्ति राष्ट्र के लिए है।

Keyword- राष्ट्रीय एकीकरण, अखंडता, शक्तिशाली, हिंदू मुस्लिम, अंधविश्वास, ब्रह्म समाज, विनाशकारी शक्तियों

व्यक्ति के लिए नहीं इस दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति अपने राष्ट्र का अभिन्न अंग है राष्ट्र से अलग होकर उसका कोई अस्तित्व नहीं होता अतः प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह राष्ट्र की दृढ़ता तथा अखंडता को बनाए रखने में पूर्ण सहयोग प्रदान करें एवं राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने के लिए राष्ट्रीयता की भावना परम आवश्यक है प्रत्येक राष्ट्र की उन्नति अथवा उन्नति इस बात पर निर्भर करती है कि उसके नागरिकों में राष्ट्रीयता की भावना किस सीमा तक विकसित हुई है यदि नागरिक राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत है तो राष्ट्र उन्नति के शिखर पर चढ़ता रहेगा राष्ट्रीयता की भावना को विकसित करने के लिए शिक्षा की आवश्यकता है इसलिए प्रत्येक राष्ट्र अपने अस्तित्व बनाए रखने के लिए अपने नागरिकों में राष्ट्रीयता की भावना में विकास हेतु शिक्षा को अपना मुख्य साधन बना लेते हैं विश्व शांति का आशय उन नियमों निर्देशों परंपराओं एवं मूल्यों से है जो कि विश्व समुदायों में शांति व्यवस्था को बनाए रखने में सहायता करते हैं प्रोफेसर एसके दुबे के शब्दों में विश्व शांति का आशय उस प्रक्रिया से है।

1. INTRODUCATION

जिसमें ज्ञान की प्राप्ति मूल्यों अभिवृत्ति यों कौशलों पर्यावरणीय संतुलन एवं सामाजिक शांति का विकास संभव होता है जो कि एक आदर्श एवं अध्यात्मिक समाज के निर्माण का आधार होती है यह समाज विभिन्न कला एवं विवादों से पूर्णता मुक्त होता है विश्व शांति की अवधारणा हमारी शिक्षा व्यवस्था में प्राचीन काल से ही रही है प्राचीन काल में राजा टिकट विद्वानों से गुरुओं से एवं धर्म के पुरुषों से चला लिया करते थे राजनीति एकता राष्ट्रीय की शिक्षा से राष्ट्र में राजनीति एकता का विकास होता है राजनीतिक एकता का अर्थ है राष्ट्र में जातीयता प्रांतीय ता तथा समाज के वर्ग भेज दो से ऊपर उठाकर राष्ट्र के विभिन्न प्रांतों सामाजिक इकाइयों तथा जातियों में एकता का होना सामाजिक उन्नति राष्ट्र की उन्नति अथवा उन्नति उसकी सामाजिक स्थिति पर भी बहुत कुछ आधारित होती है सामाजिक कुरीतियां अंधविश्वास तथा दोषपूर्ण रीति रिवाज राष्ट्र की प्रगति में बाधक सिद्ध होते हैं तथा पतन की ओर ढकेल देते हैं राष्ट्रीयता की शिक्षा राष्ट्र की संस्कृति का संरक्षण विकास तथा हस्तांतरण करती है यदि राष्ट्रीयता की शिक्षा की व्यवस्था उचित रूप से नहीं की गई तो राष्ट्र की संस्कृति विकसित नहीं होगी परिणाम स्वरूप राष्ट्रपति की दौड़ में पिछड़ जाएगा भारत एक विशाल देश है इस विशालता के कारण इस देश में हिंदू मुस्लिम जैन ईसाई पारसी तथा सिखा दी विभिन्न धर्मों तथा जातियों एवं संप्रदायों के लोग हैं या धर्म भारत का सबसे पुराना धर्म है जो वैदिक धर्म सनातन धर्म पौराणिक धर्म ब्रह्म समाज आदि विभिन्न मतों

संप्रदायों तथा जातियों में बटा हुआ है आदर्शवादी मूल्यों की वर्तमान समय में लगभग दयनीय दशा है शांति शिक्षा की आवश्यकता बालक को में सामाजिक गुणों के विकास के लिए जरूरी है जिससे समाज में शांति स्थापित की जा सके सामान्य रूप से या देखा जाता है कि जब व्यक्ति चरित्र हीनता से ग्रसित होता है तो उसका प्रत्येक कार्य सामाजिक अशांति उत्पन्न करता है शांति शिक्षा मानव में सर्वप्रथम चारित्रिक गुणों का विकास करती है एवं व्यक्ति को उसके दायित्व एवं व्यवहार के लिए आदर्श दिशा निर्देश प्रदान करती है।

हमारी शिक्षा को ऐसी आदतों तथा दृष्टिकोण एवं गुणों का विकास करना चाहिए जो नागरिकों को इस योग्य बना देगी वह जनतांत्रिक नागरिकों के उत्तरदायित्व को वाहन करके उन विघटनकारी प्रवृत्तियों का विरोध कर सकें जो व्यापक राष्ट्रीय तथा धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण के विकास में बाधा डालती है भारतीय संविधान में ऐसे आदर्शों और सिद्धांतों का समावेश किया जिसमें भारत की एकता शक्तिशाली होती है यह सिद्धांत भारत की एकता और अखंडता के लिए आवश्यक है यह है लोकतंत्र मौलिक अधिकार मौलिक कर्तव्य एकीकृत न्याय व्यवस्था पर निरपेक्षता सामान राष्ट्रीय प्रतीक और राष्ट्रीय पर्व आदि शांति के लिए शिक्षा के मायने में शांति शिक्षा अलग है शांति शिक्षा में शांति की स्थिति पाठ्य चार्य मैं शामिल एक विषय की तरह है ऐतिहासिक रूप से नैतिक शिक्षा और मूल्य शिक्षा शांति के लिए शिक्षा के पूर्वज हैं विद्यालय की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के मुताबिक धर्म मूल्य सृजन का एक स्रोत है मूल्य और अभिवृत्ति यों शांति की संस्कृति का निर्माण करने वाली भवन सामग्री की तरह है भारत हमारा देश है और हमारी राष्ट्रीयता भारतीयता है हमारा राष्ट्र केवल एक भौगोलिक इकाई ही नहीं अपितु या लोगों की एक ऐसी कई है जिसकी संवेग है यह की हम एक ही देश के नागरिक हैं।

जब हमारे ऊपर कोई बड़ी चुनौती आती है तब हम सब एक होकर इन विनाशकारी शक्तियों के विरुद्ध लड़ते हैं अपने तरीकों से हम अपने देश की सहायता करते हैं और ऐसा करने से हम क्षेत्रीय भाषा धर्म और संप्रदाय का विचार नहीं करते इस भांति हम राष्ट्रीय एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं राष्ट्रीय एकीकरण एक सकारात्मक विश्वास है जो हमें प्रगति और सामाजिक विकास में मदद करता है हमारा संविधान राष्ट्रीय ध्वज एवं राष्ट्रीय गीत संपूर्ण देश को एकता के सूत्र में पी रोते हैं राष्ट्रीय शिक्षा केवल अपने ही देश की उन्नति देखकर ईर्ष्या पैदा हो जाती है यही नहीं राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित होकर एक राष्ट्र अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए दूसरे शब्दों का विध्वंस करने तथा उन्हें हड़पने के लिए भी सदैव तैयार रहता है इसके द्वारा बालकों के हृदय में आरंभ से ही मेरा देश अच्छा अथवा बुरा तथा हमारा देश सर्वश्रेष्ठ बने आदि जैसी भावनाओं को विकसित किया जाता है यदि दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्र का अभिन्न अंग है राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने के लिए राष्ट्रीयता की भावना परम आवश्यक है देश प्रेम की भावना प्राचीन काल से है परंतु राष्ट्रीयता की भावना का विकास केवल 18वीं शताब्दी के फ्रांस के महान क्रांति के पश्चात हुआ माना जाता है संक्षेप में राष्ट्रीयता का सार राष्ट्र के प्रति आभार भक्ति आज्ञा पालन तथा कर्तव्य परायणता एवं सेवा है शांति के लिए शिक्षा पढ़ाई के भार में काफी कमी लाने की बात करती है ना कि उसे बढ़ाने की शांति जीने के लिए आनंद को मूर्त रूप प्रदान करती है शांति के दृष्टिकोण में देखे तो सीखना एक आनंददायक अनुभव होना चाहिए आनंद ही जीवन का सार है शांति गति से आ संबद्ध नहीं है आपके संसार में जल्दी बाजी और चिंता सीखने के सामंजस्य स्थान नहीं देती यही आज की कड़वी सच्चाई है जिसके चलते विद्यार्थियों के बीच आत्महत्या की घटनाएं लगातार बढ़ती जा रही है शांति के लिए शिक्षा में मूल्य शिक्षा भी समाहित है लेकिन दोनों एक ही नहीं है शांति मूल्य की संगति के लिए प्रासंगिक तौर पर उपयुक्त और लाभदायक है शांति मूल्यों के उद्देश्यों को ठोस रूप देती है और उनकी आंतरिक करण को प्रेरित करती है इस तरह के ढांचे के अभाव में अधिगम प्रक्रिया मैं मूल्यों का समावेश हो ही नहीं पाता इस तरह शांति के लिए शिक्षित करना मूल्य शिक्षा को सुंदर प्राप्त करने और संचालित करने की आदर्श रणनीति है हम स्थानीय राष्ट्रीय और भूमंडलीय स्तर पर अभूतपूर्व हिंसा के युग में जी रहे हैं।

राष्ट्र एक देश है जिसमें सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना जुड़ी होती है जिसमें विभिन्न लोग मिलकर एक होने की भावना व्यक्त करते हैं या एक होने की भावना सामान इतिहास समाज सम्मिलित मूल्य और संस्कृति के आधार पर होती है सबसे बड़ी बात तो यह है कि एक होने की भावना लोगों को एक राष्ट्र के रूप में बनती है भारत एक राष्ट्र है या एक जमीन है जो विभिन्न समुदायों के निवास से बनी है यह लोग विभिन्न धर्मों और भाषाओं को बोलते हैं इन लोगों की जीवन पद्धति भिन्न है लेकिन इन सब धार्मिक भाषाएं विविधताओं के होते हुए भी हमें ऐसा लगता है कि हम भारतीय हैं राष्ट्रीय एकीकरण एकता कार आत्मक पहलू है यह पहलू सामाजिक आर्थिक तथा आर्थिक विविधताओं या गैर बराबरी को कम करती है और राष्ट्रीय एकता एवं शुद्धता को बढ़ाती है इस तरह की सुदृढ़ता किसी प्राधिकार के दबाव नहीं डालती वास्तव में लोग विचारों मूल्य तथा सोएगा आत्मक तत्वों में भागीदारी करते हैं या एक ऐसी भावना है जो विविधता में एकता लाती है हमारे लिए राष्ट्रीय पहचान सर्वोत्तम है हमारे राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा देने वाले तत्वों में सामान आर्थिक समस्याएं कला साहित्य राष्ट्रीय उत्सव राष्ट्रीय ध्वज राष्ट्रीय गीत आदि हैं शिक्षक अपने मन वचन और व्यवहार से एक आदर्श प्रस्तुत करके समस्त छात्रों में राष्ट्रभक्ति उत्पन्न करता है ऐसे शिक्षकों से बालकों को नवीन दिशा मिलती है और वह राष्ट्र निर्माण में सहयोग प्रदान करते हैं उचित दिशा निर्देश देना जीवन में प्रगति मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए व्यक्तियों में विश्व शांति की अनिवार्यता एवं सहयोग की समझ का विकास करना रीना दुर्भावना क ल ह हिलसा आदि के दुष्प्रभावों से अवगत कराना व्यक्ति समाज राष्ट्र विश्व एवं पर्यावरण की समझ का विकास करना इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए शांति के लिए शिक्षा के माध्यम से विद्यालय जीवन में खतरनाक तरीके से बढ़ रही हिंसा को रोका जा सकता है जैसे विद्यालयों में बढ़ती हिंसा अनुशासन की

कमी तनाव आत्महत्या आदि गंभीर समस्याओं को सरलता से हल किया जा सकता है स्थानीय संपदा का उपयोग इस क्षेत्र को मिलना चाहिए कुछ समय पहले महाराष्ट्र में रोजगार के अवसर प्राप्त करने के लिए अन्य राज्यों के लोगों को अवसर ना देने के लिए इसी क्षेत्र में पैदा हुए लोगों को रोजगार देने की मांग की गई थी नवंबर 2000 में देश में 3 राज्यों तथा छत्तीसगढ़ उत्तरांचल और झारखंड का पृथक राज्य की तरह निर्माण हुआ इन राज्यों का निर्माण क्षेत्रीय भावनाओं और वफादारी पर आधारित था जब यह राज क्षेत्रीय भावनाओं पर बन गए तब कई नए राज्यों की मांग प्रारंभ हुई उत्तर प्रदेश में हरित प्रदेश और पूर्वांचल क्षेत्रों में स्वायत्त राज्यों की मांग उठने लगी है भारतीय संविधान में ऐसे आदर्श और सिद्धांतों का समावेश किया जिसमें भारत की एकता शक्तिशाली होती है यह भारत की एकता और अखंडता के लिए आवश्यक है।

19 नवंबर को वर्ष 2013 से भारत में राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जाता है या देश की पहली महिला प्रधानमंत्री की जयंती है 19 नवंबर से शुरू होकर 25 नवंबर तक पूरा सप्ताह देश में राष्ट्रीय एकीकरण के लिए समर्पित रहा है इसे राष्ट्रीय एकता सप्ताह या कौमी एकता सप्ताह कहा जाता है भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय एकता सप्ताह की शुरूआत देश के नागरिकों के बीच भाईचारे और एकता को बढ़ावा देने का एक प्रयास है इस सप्ताह को मनाने के लिए कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जैसे राष्ट्रीय एकता शिविर राष्ट्रीय युवा महोत्सव और आदान-प्रदान कार्यक्रम इस सप्ताह का आनंद लेने और हमारे देश के लोगों के बीच एकता को प्रोत्साहित करने के लिए आयोजित हुए घटनाओं में से एक है भारत एक ऐसी भूमि है जहां लोग अपनी अनोखी संस्कृति और और जीवन शैली के विविध पहलुओं के साथ रहते हैं 1947 में भारतीय इतिहास में केवल एक बार राजनीतिक एकता प्राप्त हुई जब ब्रिटिश को यहां से जाने के लिए मजबूर किया गया उन्होंने यहां विभाजित करने और शासन करने के लिए विभिन्न प्रकार की नियोजित नीतियों का पालन किया था लेकिन अंत में वे असफल हो गया।

निष्कर्ष - राष्ट्रीय एकीकरण एक राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है उसी की आवश्यकता महसूस की जा रही है लेकिन इसे प्रोत्साहित करने की प्रयास भारत में उतने सफल नहीं हुए हैं हमारे देश के लोगों में अभी भी बहुत अधिक आशा मानता और नफरत है सरकार को राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए कुछ करें कदम उठाए जाने चाहिए और लोगों को राष्ट्र को मजबूत बनाने और आने वाली पीढ़ियों को बेहतर भविष्य देने के लिए इसका समर्थन करना चाहिए राष्ट्रीय एकता भारत की एकल पहचान लोगों की एकता के रूप में विभिन्न धर्मों के लोगों के बीच एकता लाने की एक प्रक्रिया है विश्व शांति शिक्षा जिसमें ज्ञान की प्राप्ति मूल्यों अभिनेत्रियों कौशलों पर्यावरणीय असंतुलन एवं सामाजिक शांति का विकास संभव होता है जो कि आदर्श एवं अध्यात्मिक समाज के निर्माण का आधार होती है यह समाज विभिन्न कला एवं विवादों से पूर्णता मुक्त होता है।